चार महीने की बाढ़ है यहां सालाना सरकारी छुट्टी

शहरबन्नी गांव के प्राथमिक विद्यालय में चौथी कक्षा में पढ़ने वाली मीना कभी गरमी की छुट्टियां नहीं मनातीं. क्योंकि उसके स्कूल में गरमी की छुट्टी के बदले बाढ़ की छुट्टियां दी जाती हैं. हर साल 15 अगस्त से 15 सितंबर तक. ऐसा सिर्फ उसके स्कूल में नहीं होता. फरकिया इलाके के कई स्कूलों में गरमी के बदले बाढ़ की ही छुट्टियां होती हैं. सरदी, गरमी और बरसात की तरह फरकिया में बाढ़ भी एक मौसम की तरह ही आता है. हर साल जुलाई के महीने में नदियों का पानी गांव की गलियों में घुसने लगता है और अगस्त-सितंबर के महीने में अगर किसी को घर से किराने की दुकान तक भी जाना हो तो नाव का ही सहारा लेना पड़ता है. ऐसे में यह माना जाता है कि गरमी की छुट्टियों के बदले बाढ़ की छुट्टी देना ही बेहतर है.

पुष्यमित्र

शहरबन्नी स्थित प्राथमिक विद्यालय. यहां हर साल चार महीने ठप रहती है पढ़ाई.

शहरबन्नी के मुखिया नागेश्वर साह कहते हैं कि वैसे छुट्टी अगस्त-सितंबर में ही हो जाती है, मगर यह स्कूल जुलाई से अक्तूबर तक बंद ही रहता है. क्योंकि जुलाई के बाद से ही गांव आना हो तो नाव का सहारा लेना पड़ता है. ऐसे में बाहर से आने वाले शिक्षक आना बंद कर देते हैं. हम भी उन्हें जान-जोखिम में डालकर आने कैसे कह सकते हैं.

न एएनएम न आंगनबाड़ी

शहरबन्नी तो फिर भी सड़क से जुड़ा है. मगर शहरबन्नी से आगे फरकिया के कई गांव जैसे मोहरा घाट, गुलरिया, तिलकपुर, तिलकेश्वर स्थान, आगर, दह, गोलमा, तेगच्छा, अर्थुआ जैसे कई गांव हैं, जिनके लिए ये चार महीने एक तरह से छुट्टी के ही हैं. इन दिनों इन गांवों में रहने वाले छह साल के बच्चे से लेकर कालेज जाने वाले लड़कों तक की पढ़ाई ठप पड़ जाती है. क्योंकि रोज नाव पार कर शहर जाना भी कोई कम जोखिम का काम नहीं.

इन दिनों गांव में एएनएम भी नहीं आतीं और आंगनबाड़ी केंद्र भी नहीं खुलते. इमरजेंसी अगर होती है तो नाव का सहारा लिया जाता है. लोग भगवान से मनौती मानते हैं कि किसी की तबीयत रात में नहीं बिगड़े. क्योंकि नावें रात में नहीं चलतीं.

फायदे भी हैं बाढ़ के

वैसे तो अब फरकिया के लोग बाढ़ का भी इंतजार करने लगे हैं. उनकी नजर में बाढ़ के कई फायदे हैं. लोजपा अध्यक्ष रामविलास पासवान के भतीजे शंभू पासवान कहते हैं. बाढ़ आने से सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि सारी नदियां मिलकर एक हो जाती हैं. एक बार गांव से नाव खुली तो सीधे बांध पर उतरते हैं. दूसरे मौसम में तो तीन बार नाव पर चढ़िये और तीन कोस पैदल चलिये. दूसरा फायदा पांक(सिल्ट) का है. बाढ़ के बाद जो खेतों में पांक छूट जाती है उससे हमारे खेत काफी उपजाऊ हो जाते हैं. ऐसे में रबी की खेती बिना खाद पानी के हो जाती है. बीज छींट दीजिये और फसल काट लीजिये.

मेह बरसे या धूप

शंभू जी का गांव तो खैर सड़क से जुड़ गया है और उनके चाचा जी के प्रताप से वहां कई दूसरी सुविधाएं भी हो गयी हैं. मगर गुलरिया जैसे गरीब मुशहरों के गांव के लिए तो बाढ़ का मतलब मरण ही है. उनके फूस के बने छोटे-छोटे झोपड़े कभी भी बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं और फिर उन्हें पड़ोस गांव के किसी पक्का मकान वाले या अपने गांव के सामुदायिक भवन की छत पर ठिकाना बनाना पड़ता है. वहां चाहे मेह बरसे या धूप पानी उतरने तक का समय वहीं गुजारना पड़ता है. कई लोग इस समय में पलायन कर जाते हैं. गुलरिया के जयकांत सदा बताते हैं कि ऐसे में हमलोगों के लिए सबसे बेहतर होता है कि हमलोग कमाने के लिए गांव छोड़कर दिल्ली या पंजाब के लिए निकल जाते हैं और जब पानी उतरता है तभी लौट कर आते हैं. मगर जयकांत द्वारा अपनाया गया यह उपाय भी सिर्फ जवान लोगों के लिए ही मुफीद है, बुजुर्ग लोगों को गांव में ही रह कर काटना पड़ता है.

किसी हाल में आपदा से कम नहीं

फरकिया के लोग हालांकि अपना पूरा जीवन बाढ़ के साथ गुजारते रहे हैं. मगर बाढ़ किसी भी सूरत में आपदा से कम नहीं हो सकती. बाढ़ में सांप-बिच्छू का भय. नाव डूबने का खतरा. खाने-पीने की परेशानी. जलावन की दिक्कत और जानवर के चारे की किल्लत. शौच की परेशानी. यानी हर तरह से परेशानी ही परेशानी होती है.

फरकिया-3

>> पानी उतरने के बाद जो सड़ांध बच जाती है, वह गांव को कई तरह की बीमारियां देकर जाती है. हैजा, मलेरिया और कॉलरा.

नौका दुर्घटना

दो साल पहले शहरबन्नी गांव से पहले फुलतोड़ा के पास भीषण नौका दुर्घटना हुई थी जिसमें 75 लोगों की डूबने से मौत हो गयी थी. दुर्घटना के वक्त नाव पर फुलतोड़ा और शहरबन्नी गांव के लोग सवार थे. फुलतोड़ा में तो लगभग हर परिवार से एक-दो लोगों की मौत हो गयी. कई परिवार पूरी तरह समाप्त हो गये. इसके बाद बांध से लेकर शहरबन्नी तक सड़क बनी और शहरबन्नी गांव का आधुनिक काल प्रारंभ हो गया. मगर आगर घाट, मोहरा घाट और गुलरिया जैसे गांव में आज भी सड़क एक सपना है. वहां नाव डूबने का खतरा हर रोज है. क्योंकि नाव के बगैर वहां एक गांव से दूसरे गांव तक जाना भी नामुमकिन है.

बाढ़ के बाद बीमारियां

बाढ़ का पानी जब उतरता है तो सिर्फ पांक ही नहीं छोड़ता. पानी उतरने के बाद जो सड़ांध बच जाती है, वह विदाई के तौर पर गांव को कई तरह की बीमारियां देकर जाती है. हैजा, मलेरिया और कॉलरा. इन गांवों में कालाजार भी एक मेहमान ही है. अलौली प्रखंड मुख्यालय स्थित स्वास्थ्य केंद्र के बीएचएम राजीव कुमार भी कहते हैं कि लोग सड़ी मछलियां खाकर कालाजार के शिकार हो जाते हैं. मगर जब भूख लगी हो और खाने को कुछ नहीं हो तो भला इंसान क्या खाये. इसका जवाब किसी सरकारी मशीनरी के पास नहीं है. उस पर जिस इलाके में हर साल चार महीने के लिए बाढ़ आती हो वहां सरकार या कोई स्वयंसेवी संस्था राहत कार्य भी क्यों संचालित करे. ऐसे में लोगों ने बाढ़ के साथ जीने की कला सीख ली है.

आईएम4चेंज मीडिया फैलोशिप के तहत प्रकाशित

आगर घाट, मोहरा घाट और गुलरिया जैसे गांव में आज भी सड़क एक सपना है. वहां नाव डूबने का खतरा हर रोज है.

कुलिहर भदई बोओ यार, तब चिउरा की होय बहार.
(कुलिहर (पूस-माघ में जोते हुए) खेत में भादों में पकनेवाला धान बोने से चिउड़े का आनंद आता है. अर्थात वह धान उपजता है.)